Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

Vol:23
Issue:05

Monthly ANSARULLAH Qadian

MAJLIS ANSARULLAH BHARAT

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

2025
May

Date of Publication : 10-05-2025

Masjid Mubarak, Islamabad U.K

www.ansarullahbharat.in | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz | Honorary Editor: H.Shamsuddin

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की मुखपत्रिका

मासिक

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

मई 2025 हिज्रत 1404 हि.श.	प्रबंधक अताउल मुजीब लोन	संस्करण–23 **अंक** -05

सम्पादक : सय्यद रसूल नियाज | एजाज़ी सम्पादक : एच्.शम्सुद्दीन

स.सम्पादक(हिन्दी) : वसीम अहमद अज़ीम

संपादन मंडल

सय्यद कलीम अहमद अजबशेर

मोहम्मद इब्राहीम सरवर

मैनेजर

आज़िज़अहमद नासिर

9682536974

प्रेस

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस

क़ादियान

वार्षिक मूल्य :₹ 250

विदेश: $ 50

प्रकाशन स्थान

ऐवाने अन्सार, भारत

क़ादियान 143516

जिला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 7837985190

Email:

risalamab@qadian.in

WEB LINK

https://www.ansarullahbharat.in/Publications/

विषय सूची	पृष्ठ
दीवानों की सूची में एक नाम बढ़ा दे	02
इरशाद-ए-रब्बानी	03
हदीस-ए- नबवी	03
मल्फ़ूज़ात (उपदेश) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	04
"हमारा ईमान है कि ख़लीफ़ा ख़ुदा स्वंय बनाता है"	05
मंज़ूरी तारीख़ इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह भारत 2025	06
ये हैं ख़िलाफ़त के सुल्तान-ए-नसीर!	07
दाँतों की सुरक्षा	09

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ
अन्सारुल्लाह
ज़ुल-क़अदा-ज़ुल-हज्जा 1446 हि.

संपादकीय

दीवानों की सूची में एक नाम बढ़ा दे

ख़िलाफ़त वास्तव में अल्लाह तआला की ओर से उन मोमिनों और नेक कर्म करने वालों के लिए एक महान वरदान है। चूँकि यह वादा स्वयं अल्लाह तआला ने किया है, इसलिए उसे पूरा करने वाला भी वही है। हर युग में, अल्लाह अपने नबी के मिशन को ख़ुल्फ़ा-ए-किराम के माध्यम से आगे बढ़ाता है। इस तरह उसका नूर सारी दुनिया में फैलता चला जाता है।

यह बात भी स्पष्ट है कि नेतृत्व, गहरी समझ और आध्यात्मिक दृष्टि जैसे विशिष्ट गुण, ख़ुल्फ़ा की पहचान होते हैं। उनके प्रकाशमान चेहरों से न केवल ईमान वालों को मार्गदर्शन प्राप्त होता है, बल्कि शत्रु भी उनके प्रभाव के आगे नतमस्तक हो जाते हैं।

ख़िलाफ़त वह क़ुदरत-ए-सानिया है, जिसे हबलुल्लाह यानी अल्लाह की रस्सी कहा गया है। नबी करीम ﷺ ने विशेष रूप से आदेश दिया कि: "जब तुम ज़मीन पर अल्लाह के ख़लीफ़ा को देखो तो उससे मजबूती से चिमटे रहो, चाहे तुम्हारे शरीर को कष्ट पहुँचे या तुम्हारा धन छिन जाए।" (मुस्नद अहमद)

क्योंकि आज उद्धार उसी नाव के सवार का होगा, जिसके खिवैया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा हैं।

आज जब हम ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की निरंतर प्रगति और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव को देखते हैं, तो यह हर इंसान को पुकार कर कहता है:

ऐ अक़्ल-ए-रसां! अब तेरा कुछ काम नहीं
दीवानों की फेहरिस्त में एक नाम बढ़ा दे!

(कलाम: मुख़्तार)

(एच.शमसुद्दीन)

यौम - ए - ख़िलाफ़त

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"... 27 मई ... जैसा कि हर अहमदी जानता है, इस दिन जमाअते अहमदिया में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद ख़िलाफ़त का आग़ाज़हुआ और इसी की याद में जमाअत में यह दिन यौम-ए-ख़िलाफ़त के तौर पर मनाया जाता है।"

(ख़ुतबा-ए-जुमा, 27 मई 2016)

इरशाद-ए-रब्बानी

وَعَدَ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسۡتَخۡلِفَنَّہُمۡ فِی الۡاَرۡضِ
کَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِہِمۡ ۪ وَ لَیُمَکِّنَنَّ لَہُمۡ دِیۡنَہُمُ الَّذِی ارۡتَضٰی لَہُمۡ وَ
لَیُبَدِّلَنَّہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِہِمۡ اَمۡنًا ؕ یَعۡبُدُوۡنَنِیۡ لَا یُشۡرِکُوۡنَ بِیۡ شَیۡئًا ؕ وَ مَنۡ کَفَرَ
بَعۡدَ ذٰلِکَ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿۵۶﴾ اَقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ وَ اٰتُوا الزَّکٰوۃَ وَ
اَطِیۡعُوا الرَّسُوۡلَ لَعَلَّکُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿۵۷﴾ (النور 56تا57)

अल्लाह ने तुम में से ईमान लाने वालों और उचित (अच्छे) कर्म करने वालों से वादा किया है कि वह उन्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बना देगा- जैसे कि उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया गया था। और उस दीन को, जिसे उसने उनके लिए पसन्द किया है, वह उनके लिए मज़बूती से स्थापित कर देगा और उनके डर की हालत को अमन (शांति) की हालत में बदल देगा। वे मेरी ‘इबादत करेंगे और किसी चीज़ को मेरा शरीक (भागीदारी) नहीं बनाएँगे। और जो लोग इसके बाद भी इंकार करेंगे, वे फासिक़ों (झूठों) में से गिने जाएँगे।और तुम सब नमाज़ों को क़ायम करो और ज़कात दो, और इस रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहमत की जाए। (अन-नूर 56 से 57)

हदीस-ए-नबवी

قَالَ حُذَيْفَةُ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صلى الله عليه وآله وسلم : تَكُوْنُ النُّبُوَّةُ فِيْكُمْ مَاشَاءَ اللّٰهُ أَنْ تَكُوْنَ، ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ إِذَا شَاءَ أَنْ يَّرْفَعَهَا، ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ فِيْكُمْ مَاشَاءَ اللّٰهُ أَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا إِذَا شَاءَ أَنْ يَّرْفَعَهَا، ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا عَاضًّا فَتَكُوْنُ مَاشَاءَ اللّٰهُ أَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا إِذَا شَاءَ اللّٰهُ أَنْ يَّرْفَعَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا جَبْرِيًّا، فَتَكُوْنُ مَاشَاءَ اللّٰهُ أَنْ تَكُوْنَ، ثُمَّ يَرْفَعُهَا إِذَا شَاءَ اللّٰهُ أَنْ يَّرْفَعَهَا، ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ، ثُمَّ سَكَتَ۔ (مسند احمد، حدیث نمبر 12034،)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-अल्लाह तआला की मर्ज़ी के मुताबिक़ कुछ समय तक नबुव्वत स्थापित रहेगी, फिर जब अल्लाह चाहेगा, इसे उठा लेगा। नबुव्वत के बाद उसी तरीक़े पर अल्लाह की मर्ज़ी से कुछ समय तक ख़िलाफ़त होगी, फिर अल्लाह तआला इसे भी ख़त्म कर देगा।इसके बाद अल्लाह के हुक्म से एक समय तक बादशाहत होगी जिसमें ज़ुल्म व ज़्यादती होगी, और आख़िरकार वह भी ख़त्म हो जाएगी। फिर जबरन बादशाहत का दौर आएगा, जो कुछ समय के बाद पतन का शिकार हो जाएगा। उसके बाद नबुव्वत के तरीक़े पर फिर से ख़िलाफ़त स्थापित होगी। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खामोश हो गए। (मुस्नद अहमद, हदीस नं. 12034)

मल्फ़ूज़ात (उपदेश)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

तो हे प्रियो! जब से यह सृष्टि बनी है, तब से अल्लाह तआला की यह ही सुन्नत (नियम/परंपरा) रही है कि वह दो तरह की क़ुदरतें (शक्तियाँ) दिखाता है, ताकि विरोधियों की दो झूठी खुशियों को मिटा दे। इसलिए अब यह संभव नहीं है कि अल्लाह तआला अपनी इस पुरानी परंपरा को छोड़ दे।

तुम लोगों के लिए दूसरी क़ुदरत को देखना भी ज़रूरी है, और उसका आना तुम्हारे लिए अच्छा होगा, क्योंकि वह हमेशा रहने वाली होगी, जिसका सिलसिला क़यामत तक जारी रहेगा।

मैं अल्लाह की तरफ से एक क़ुदरत के रूप में ज़ाहिर हुआ हूँ, और मैं अल्लाह की मूर्त(प्रत्यक्ष) क़ुदरत हूँ। और मेरे बाद कुछ और लोग होंगे, जो दूसरी क़ुदरत का प्रतीक (नुमाइंदा) होंगे। इसलिए तुम लोग दूसरी क़ुदरत का इंतज़ार करते हुए एकजुट होकर दुआ करते रहो।

हर एक नेक लोगों की जमाअत हर एक देश में मिलकर दुआ में लगी रहे, ताकि दूसरी क़ुदरत आसमान से उतरे और तुम्हें दिखाए कि तुम्हारा रब कितना क़ादिर (सक्षम) है। अपनी मौत को नज़दीक समझो, तुम्हें नहीं पता कि वह घड़ी कब आ जाएगी।

और यह ज़रूरी है कि जमाअत के बुज़ुर्ग, जो अपने नफ़्स (मन) को पाक रखते हैं, मेरे नाम पर मेरे बाद लोगों से बैअत लें। ऐसे लोगों का चुनाव ईमानदारों की आपसी सहमति से किया जाएगा। इसलिए जिस शख़्स के बारे में चालीस मोमिन यह राय देंगे कि वह इस योग्य है कि मेरे नाम पर बैअत ले, वह बैअत लेने का अधिकारी होगा। और उसे चाहिए कि वह खुद को दूसरों के लिए एक आदर्श बनाए।

अल्लाह ने मुझे यह खबर दी है कि मैं तेरी जमाअत के लिए तेरी ही औलाद में से एक व्यक्ति को स्थापित करूँगा, और उसे अपनी नज़दीकी और वहयी (ईश्वरीय संवाद) से नवाज़ूँगा। और उसके ज़रिए हक़ की तरक्की होगी और बहुत से लोग सच्चाई को कुबूल करेंगे। इसलिए उन दिनों का इंतज़ार करते रहो, और याद रखो कि हर किसी की पहचान उसके समय में ही होती है, और हो सकता है कि पहले-पहल वह एक आम इंसान लगे

(अल-वसीयत/रूहानी ख़ज़ाइन,ज़िल्द 20, पृष्ठ 304-306)

निर्देश हज़रत खलीफ़तुल मसीह अलखामिस
अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

"हमारा ईमान है कि ख़लीफ़ा ख़ुदा तआला स्वंय बनाता है"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला फरमाते हैं:

" हमारा ईमान है कि ख़लीफ़ा अल्लाह तआला ख़ुद बनाता है, और उसके चुनाव में कोई कमी नहीं होती। जिसे अल्लाह यह रिदा (कुरता) पहनाता है, कोई नहीं जो इस रिदा को उतार सके या छीन सके।

वह एक कमज़ोर बंदे को चुनता है, जिसे लोग कभी-कभी तुच्छ भी समझते हैं, मगर अल्लाह तआला उसे चुनकर अपनी महानता और प्रताप का ऐसा नूर दिखाता है कि उसका वजूद दुनिया से मिटकर अल्लाह की क़ुदरत में खो जाता है।

फिर अल्लाह तआला उसे उठाकर अपनी गोद में बैठा लेता है और हर हाल में अपनी मदद और नुसरत उसके साथ रखता है।

उसके दिल में अपनी जमाअत का ऐसा दर्द पैदा कर देता है कि वह उस दर्द को अपने दर्द से ज़्यादा महसूस करने लगता है। और इस तरह जमाअत का हर फ़र्द (व्यक्ति) यह महसूस करने लगता है कि उसका दर्द रखने वाला, अल्लाह के सामने उसके लिए दुआ करने वाला, उसका हमदर्द एक वजूद मौजूद है। (रोज़नामा अल-फ़ज़ल, 30 मई 2003)

"याद रखो! वह सच्चे वादों वाला ख़ुदा है। वह आज भी अपने प्यारे मसीह की इस प्यारी जमाअत पर अपना हाथ रखे हुए है। वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा, और कभी नहीं छोड़ेगा, और कभी नहीं छोड़ेगा। वह आज भी अपने मसीह से किए हुए वादों को उसी तरह पूरा कर रहा है, जैसे कि वह पहली ख़िलाफ़तों में करता रहा है।"

(ख़ुत्बा जुमा, 21 मई 2004)

"यह ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा का दौर है। इसमें भी हसद (जलन) की आग और मुख़ालिफ़त ने ज़ोर पकड़ लिया। कमज़ोर और निहत्ते अहमदियों पर ज़ालिमाना हमले करके, ख़ून की ऐसी होली खेली गई जिसे देखकर यह फ़र्क करना मुश्किल हो जाता है कि यह इंसानों का काम है या जानवरों से भी बदतर किसी मख़लूक़ का।

फिर अंदर से जमाअत के हमदर्द बनकर, जमाअत में फूट डालने की कोशिशें भी कुछ जगह होती रहीं। मगर अल्लाह तआला के वादे के मुताबिक, अल्लाह की मदद से

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

INDIAN AUTO
हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।
P. Ali Koya
CALICUT (KERALA)

SONET SOLUTIONS
PRIVATE LIMITED
No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043
तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

मंज़ूरी तारीख़ इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत 2025

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल-अज़ीज़ ने मज्लिस अंसारुल्लाह भारत का सालाना इज्तिमा क़ादियान दारुल-अमान में दिनांक 24, 25 और 26 अक्तूबर 2025 - जुम्मा, सनीचर और इतवार - को आयोजित करने की मंज़ूरी फरमाई है।

अराकीन से दरख़्वास्त है कि इस मुबारक इज्तिमा में शिरकत के लिए अभी से दुआओं के साथ तैयारियाँ शुरू कर दें। अल्लाह तआला हर लिहाज़ से इस इज्तिमा को कामयाब फ़रमाए। आमीन।

(सद्र इज्तिमा कमेटी, मज्लिस अंसारुल्लाह भारत)

शेष भाग पृ. 5:

ताईद शुदा ख़िलाफ़त की ज़बरदस्त ताक़त इसका मुक़ाबला करती रही, और कर रही है। बल्कि हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला ही उसका मुक़ाबला कर रहा है। मैं तो एक कमज़ोर, बेकार इंसान हूँ, मेरी कोई हैसियत नहीं। लेकिन ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया को उस ख़ुदा का समर्थन और सहायता प्राप्त है, जो सामर्थ्यवान, शक्तिशाली और सब ताक़तों का स्रोत है।

(ख़ुत्बा जुमा, 27 मई 2011)

ये हैं ख़िलाफ़त के सुल्तान-ए-नसीर!

ख़ुलफ़ा-ए-इज़ाम के फरमूदात की रौशनी में

ऐ मेरी उल्फत के तालिब!
यह मेरे दिल का नक़्शा है
अब अपने नफ़्स को देख ले तू
वो इन बातों में कैसा हैगुण जो

गुण जो ख़िलाफ़त के सुल्तान-ए-नसीर में होने चाहिए:

✓ **ऐसे आज्ञाकारी** हों जैसे मृत व्यक्ति नहाने वाले के हाथों में होता है।
(फ़रमान हज़रत ख़लीफ़तुल मसिह़ अव्वल रज़ि.)

✓ वे सुस्ती और आलस्य को त्यागने वाले और आरामतलबी से दूर रहने वाले हों।

✓ वे दीन की सेवा को केवल अल्लाह का फ़ज़्ल समझकर अंजाम देने वाले हों।

✓ उनकी दीन की सेवा किसी भी दुनियावी इनाम या पुरस्कार की चाह से मुक्त हो।

✓ उनके दिल में अल्लाह की मुहब्बत की सच्ची तड़प हो और वे उसकी बारगाह में रोने वाले हों।

✓ उनका इस्लाम केवल नाम का न हो बल्कि वास्तविक और दिल से हो, और उनमें घमंड की कोई झलक न हो।

✓ उनकी आँखों में किसी पर बेवजह ग़ुस्से की चमक न हो।

✓ उनके दिल में किसी के लिए रत्ती भर भी दुश्मनी न हो।

✓ वे किसी को बुरे नामों से न पुकारें और न ही किसी की तौहीन करें।

✓ वे अपनी प्रजा के हर व्यक्ति के सच्चे शुभचिंतक हों।

✓ वे जहाँ से भी हक़ (सच) मिले, उसे ख़ुशी से स्वीकार करें।

✓ उनमें दोष निकालने की बुरी आदत न हो और वे फसाद फैलाने वाली सोच से दूर रहें।

✓ वे लालच से मुक्त और सादगी अपनाने वाले हों।

✓ उनके दिल में धन-दौलत की मोहब्बत न हो बल्कि वे रूहानी मूल्यों को प्राथमिकता दें।

✓ वे नमाज़ और रोज़े जैसी इबादतों को दिल से निभाने वाले हों।

✓ वे शरीअत के किसी भी हुक्म को हल्के में न लें बल्कि उस पर अमल करें।

✓ वे ग़रीबों और ज़रूरतमंदों की चिंता करने वाले और ज़कात व सदक़ा अदा करने वाले हों।
✓ वे अल्लाह के ज़िक्र में लीन रहने वाले और इसके आदी हों।
✓ वे अपनी अक़्ल को दीन पर हावी न होने दें।
✓ वे ज्ञान के नाम पर फैली अंधविश्वास और वहम परस्ती से दूर रहें।
✓ उनके दिल में उम्मत-ए-मुस्लिम के लिए गहरी मोहब्बत हो।
✓ वे नबी अकरम ﷺ के दुश्मनों से किसी भी तरह का संबंध न रखें।
✓ वे अमन व सुकून से ज़िंदगी बिताने वाले और फसाद से दूर रहने वाले हों।
✓ वे अपने किसी भी काम से किसी भी दीन या दुनिया के अधिकारी को परेशानी में न डालें।
✓ वे अपनी उम्र को अल्लाह की एक बड़ी नेमत समझकर उसका बेहतरीन इस्तेमाल करें।
✓ ऊँचे पद पर होते हुए भी इस्लाम उनकी पहली प्राथमिकता हो।
✓ वे अपनी खुद्दारी की हिफ़ाज़त के साथ दूसरों का भी सम्मान करने वाले हों।
✓ हर हालत में अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले हों।
✓ उन्हें अपने नफ़्स पर पूरा नियंत्रण हो।
✓ वे अल्लाह की राह में हर तरह के अपमान को हँसते-हँसते सहने को तैयार हों।
✓ वे छोटे दर्जे पर संतुष्ट न हों बल्कि ऊँचे ख़यालात रखने वाले हों।
✓ वे छोटी-छोटी बातों पर बेवजह ग़ुस्सा न करने वाले हों।
✓ उनमें मौक़े के अनुसार दूसरों की ग़लतियों को माफ़ करने की भी आदत हो।
✓ वे अपनी तुच्छ इच्छाओं को जीवन का मक़सद न बनाएं।
✓ वे हमेशा मैदाने अमल (कार्यक्षेत्र) में उतरने के लिए तैयार और सतर्क हों।
✓ वे अपनी मेहनत की कमाई खाने वाले हों और दूसरों कि सम्पत्ति पर नज़र न रखें।
✓ वे केवल योजनाओं में उलझने की बजाय अल्लाह की तदबीर पर भरोसा रखने वाले हों।
✓ वे एकमात्र ख़ुदा के सच्चे आशिक़ हों।
✓ वे दरियादिल हों लेकिन किसी के सामने हाथ फैलाने की नौबत न आए।

(उद्धृत: कलाम-ए-महमूद)
(सारांश: कलीम अहमद तीमापुरी)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"
MUSTAFA
BOOK CO
All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities
Fort Road
KANNUR-1 (KERALA)
Mobile : 09895655426

स्वास्थ्यनामा

दाँतों की सुरक्षा

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम पर जो उपकार किए हैं, उनकी गिनती करना असंभव है। रोज़मर्रा की ज़िंदगी से जुड़ी ऐसी छोटी-छोटी हिदायतें आपने दीं, जो इंसानी जीवन की दिशा ही बदल देती हैं।

आजकल बहुत से लोग दाँतों की बीमारियों से त्रस्त रहते हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी इनका कोई पक्का इलाज नहीं कर पाता।

जो दाँत गल गए, वे फिर से नहीं आते। लेकिन आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह आदत थी—और आपने इसकी ताकीद भी की—कि हर नमाज़ से पहले अच्छे ढंग से मिस्वाक करें।

अगर किसी को दिन में पाँच बार दाँत साफ़ करने की आदत हो जाए, और आप बच्चों को भी यह आदत सिखा दें, जैसा कि आप ज़रूर सिखाते, तो यह कैसे संभव है कि उम्र के किसी भी दौर में उनके दाँत खराब हो जाएँ?

असल बात यह है कि जब इंसान लापरवाही करता है और ये आदतें नहीं अपनाता, तभी दाँतों पर बुरा असर पड़ता है। कुछ बीमारियाँ ऐसी भी होती हैं जो मिस्वाक से नहीं रुकतीं,क्योंकि वे अंदरूनी होती हैं।

मगर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बीमारियों की बात नहीं कर रहे, बल्कि यह फरमा रहे हैं कि जो नेमतें अल्लाह ने तुम्हें दी हैं, उनकी हिफ़ाज़त तुम पर फ़र्ज़ है।

अगर किसी के पास अच्छे दाँत हैं और वह पाँच वक़्त की मिस्वाक की आदत अपना ले, तो उसके दाँत कभी खराब नहीं होंगे।

मेरी मुलाक़ातों में जब कोई नया दूल्हा-दुल्हन आते है, जिनके दाँत मोती जैसे चमकते हैं, तो मैं ज़रूर उन्हें नसीहत करता हूँ।

मैं कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने एक नेमत (दाँत) दी है, और एक और नेमत भी दी है—जिससे दुनिया अक्सर गाफ़िल रहती है—और वह हैं हज़रत मुहम्मद[सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम]।

आप इस पैग़ंबर की हिदायत पर चलकर अपनी इस नेमत (दाँतों) की हिफ़ाज़त कर सकते हैं। आपने फरमाया कि पाँच वक़्त मिस्वाक किया करो। आजकल अगर मिस्वाक नहीं है तो हर तरह के टूथपेस्ट मौजूद हैं। अगर आप दिन में पाँच बार दाँत साफ करें, तो ज़िंदगी भर दाँत साफ और तंदरुस्त रहेंगे।

लोगों का यह ख्याल कि उम्र के साथ दाँत ज़रूर गिरते हैं—यह गलत है। जिन दाँतों की सही देखभाल की जाए, वे उम्र के साथ और भी मज़बूत हो जाते हैं। क्योंकि दाँतों की मज़बूती का ताल्लुक मसूड़ों की मज़बूती से होता है। जब आप पाँच बार उनकी सफ़ाई करेंगे तो ज़रासीम (जीवाणु) मसूड़ों को कमज़ोर ही नहीं होने देंगे, और मसूड़े हमेशा मज़बूत बने रहेंगे।

(मशअले राह, जिल्द 3, सफ़ा 666–667)

हज़रत साहिब की किताबें जो शख़्स पढ़ेगा, उस पर फ़रिश्ते नाज़िल होंगे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल [रज़ि.] फ़रमाते हैं: **"हज़रत मसीह मौऊद[अलैहिस्सलाम] की किताबों की खरीदारी कम हो गई है। उनमें जो दर्द है, वह औरों में मिलना मुश्किल है।"** (अल-हकम,17 जून 1907)

हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि.] फ़रमाते हैं:**"जो किताबें एक ऐसे शख़्स ने लिखी हों जिस पर फ़रिश्ते नाज़िल होते थे, उनके पढ़ने से भी फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं। चुनांचे हज़रत साहिब की किताबें जो शख़्स पढ़ेगा, उस पर फ़रिश्ते नाज़िल होंगे।**(मलाएकातुल्लाह, पृ.108)

हज़रत मसीह मौऊद[अ.स.] की **तज़्किरातुश्शहादतैन, लेक्चर-सियालकोट, शहादतुल कुरआन सिराजुद्दीन ईसाई के चार सवालों का जवाब, अरबईन, बरकातुद्दुआ, दो भाषण, अय्यामुस्सुल्ह**,यह पुस्तकें तथा हज़रत मुसलेह मौऊद[रज़ि] की, **ज़िक्र-ए-इलाही, इरफ़ाने इलाही, नूरुल कुरान** सहित 13 पुस्तकों का सेट कियादत इशाअत अन्सारूल्लाह भारत आप के लिए केवल 250/- रुपये में पेश करती है। इन किताबों से आत्मिक लाभ करें।

(क़ायद इशाअत अन्सारूल्लाह भारत)

• मो.:7837985190 :स्टाक सीमित है।

मजलिस अंसारुल्लाह केरंग
खिदमत-ए-खल्क की तैयारी का दृश्य

तरबियती इजलास, मजलिस अंसारुल्लाह हैदराबाद
नायब सदर मजलिस अंसारुल्लाह भारत अहद दोहराते हुए।

मजलिस अंसारुल्लाह हैदराबाद,
जलसा वक्फ-ए-जदीद का मंज़र।

मजलिस अंसारुल्लाह हैदराबाद,
जलसा यौम-ए-मसीह मौऊद का मंज़र।

मजलिस अंसारुल्लाह नरारभिट्टा,
तरबियती इजलास का मंज़र।

तरबियती इजलास, मजलिस अंसारुल्लाह
महमूदाबाद(ओडिशा)।